# SOUL is Illuminating the future of Jhabua Students

The Solar Urja Lamp (SOUL) projectof GVT is getting popular among schools students and is showing positive results in the remote tribal town of Jhabua aand Dhar district. Jhabua and Dhar are typical tribal town with many unelectrified villages and long powercuts making it power starved area. The hilly terrain of the region and dispersed habitation of tribal community is making it all the more difficult for govt. to connect all the habitations of the villages with electric power supply.

This is a grim scenario and women & students are particularly affected by it as they are not getting proper light for their domestic works and studies respectively. The women are forced to inhale the hazardous smoke emitting kerosene lamps while the students are not able to develop a habit of study at their homes post-school hours. Thus a question arises naturally that what needs to be done to overcome this ? Should the rural population of this region wait for the development of better power infrastruture ? If this is so, we will deprive at least one generation of our stuents in wait of better power infrastructure.

In order to address these issues, IIT-B, with its expertise in developing technology,has come up with Solar Study Lamps for School students.Thus the idea of Solar Study Lamp (SOUL) project is thus developed and it included other good features like local assembly & distribution of lamps for providing employment to village youths and repair services after lamp delivery for aminimum period of one year.

In order to implemnet this project in this remote tribal region, IIT-B recognized GVT's vast experience and deep outreach in the region and selected it for implementation of this ambititous project. GVT has staerted working on this project from May 2014 and its efforts are bringing postive results at the field level.

As per the news published in newspaper i.e. "Nai Duniya" on 26.11.2014, this project is becoming popular among school students and teachers. The compact design and its simple functioning of the lamp is attractibng the students and they are happily paying Rs.120/- for the lamp as their contribution. Experiencing its benefits, now more & more schools wants the

lamps for their students. There is a sense of competition among schools to get this lamp for all the students and GVT is flooded with demands from such schools.

One student, Master Diwan Meda, from Govt. Middle School, Chhoti kawdawad village (Jhabua) is happy after getting this lamp and stated that now he does get the scolding from his teachers as now he can study at this home. Ms. Sunita Solanki, from Govt. Middle school, Mindal village is enjoying group students as students from neibouring homes are gathering at her home for study.

Thus this lamp is inculcating the habit of doing home-work among rural students and helping them in their studies. In the words of Mr. Dhanraju S, IAS, CEO, Zila Panchayat, Jhabua: “This lamp is a boon for rural students of regions like Jhabua as it provuides them the Right to Study”.

लैम्प से अब रात में भी कर पा रही सुनीता पढ़ाई।

| इतने लैम्प देना है | |
|---|---|
| ब्लॉक | लक्ष्य |
| झाबुआ | 13203 |
| मेघनगर | 10832 |
| थांदला | 12207 |
| रामा | 10229 |

# दिन की रोशनी से रात में पढ़ाई

## स्कूली बच्चों को छोटे-से सोलर लैम्प का बड़ा सहारा

**झाबुआ।** इन बच्चों के गांवों में रात होते ही बिजली गुल हो जाती है। अंधेरे में पढ़ाई नहीं कर पाते थे, लेकिन अब बत्ती चली भी जाए तो परेशानी नहीं। दिन में सूरज की रोशनी को सोलर प्लेट में सहेजकर रात में इससे उजाला करके पढ़ाई हो जाती है। गांव मिंडल के माध्यमिक स्कूल में आठवीं की छात्रा सुनीता भी इन्हीं में से एक है। उसे पढ़ने और आगे बढ़ने की इच्छा है। सुनीता का कहना है कि दिन में स्कूल जाने के पहले और लौटने के बाद घर-खेत के काम में समय बीत जाता है। रात में बिजली नहीं तो पढ़ाई नहीं, लेकिन इस छोटे से लैम्प ने पढ़ने की इच्छा पूरी कर दी।

ये संभव हुआ है इन बच्चों को सौर ऊर्जा मंत्रालय भारत सरकार की मदद से मिले सोलर लैम्प के कारण। आईआईटी मुंबई के डिजाइन किए ये लैम्प वैसे तो 500 रु. के हैं, लेकिन 5वीं से 12वीं के बच्चों को 120 रु. में दिए जा रहे हैं। बचे 180 रु. भारत सरकार का नवीन एवं सौर ऊर्जा मंत्रालय दे रहा है और 200 रु. सर दोराबजी टाटा मेमोरियल ट्रस्ट। झाबुआ जिले में 50 हजार से ज्यादा इस तरह के सोलर लैम्प स्कूली बच्चों को दिए जाना है। 4 विकासखंड में ग्रामीण विकास ट्रस्ट ये काम कर रहा है। ट्रस्ट अभी तक 23 हजार से ज्यादा लैम्प बच्चों को दे चुका है। इन लैम्प की एसेंबलिंग भी स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत हो रही है।

### देखकर ही हो रहे आकर्षित

भारतीय तकनीकी संस्थान मुंबई ने इन लैम्प को अच्छे से डिजाइन किया है। ये एक बड़ी वजह है कि लैम्प जब बच्चों के सामने प्रदर्शित किए जाते हैं तो हाथोंहाथ वो और उनके परिवार वाले इसे खरीदने को तैयार हो रहे हैं। एलईडी तकनीक के इस लैम्प के साथ एक सोलर पैनल दी जा रही है। इसे धूप या रोशनी में रखकर लैम्प से कनेक्ट कर बैटरी चार्ज की जा सकती है। एक बार चार्ज होने पर लैम्प 8 से 10 घंटे का बेकअप देता है। संस्था के रोहित पंड्या और मुकेश उपाध्याय ने बताया कि भारत सरकार देशभर में इस तरह की योजना शुरू कर रही है।

### बच्चों ने कहा- खुश हैं हम

दीवान मेड़ा

छोटी कयाड़ावद का आठवीं के छात्र दीवान मेड़ा का कहना है कि लैम्प से रातभर छाए रहने वाले अंधेरे से राहत दे दी। अब दिन में काम के बाद रात में पढ़ाई कर सकते हैं। पढ़ाई अधूरी नही रहती और अगले दिन स्कूल में डांट भी नहीं सुनना पड़ती।

नानू सिंगाड़िया

गोपालपुरा का नानू सिंगाड़िया भी आठवीं में पढ़ता है। उसने भी लैम्प लिया। नानू के अनुसार पढ़ाई के अलावा रात में घर के दूसरे लोगों के भी लैम्प काम आ रहा है। इसे इस्तेमाल कर ना और चार्ज करना काफी आसान है।

सुनीता सोलंकी

मिंडल स्कूल की आठवीं में पढ़ने वाली सुनीता सोलंकी के घर से सटा खेत है। ऐसे में खेत के काम में हाथ बंटाना पड़ता है। दिन में पढ़ाई मुश्किल है। उसने बताया कि जब से लैम्प आया है रात को उसके घर आसपास से रिश्तेदारों के बच्चे भी पहुंच जाते है और सब साथ मिलकर पढ़ाई करते हैं।

### वरदान है बच्चों के लिए

योजना में काफी कम राशि में अच्छी क्वालिटी का लैम्प दिया जा रहा है। झाबुआ जैसे जिले के बच्चों के लिए तो ये वरदान की तरह है। यहा फलियों के रूप में बसाहट है और कई जगह केबल तक पहुंचाना मुश्किल है। ऐसे में ये लैम्प उन्हें पढ़ने का अधिकार दे रहे हैं। **-धनराजू एस, सीईओ, जिला पंचायत, झाबुआ**